ग़ज़ल 22

-रविशंकर श्रीवास्तव

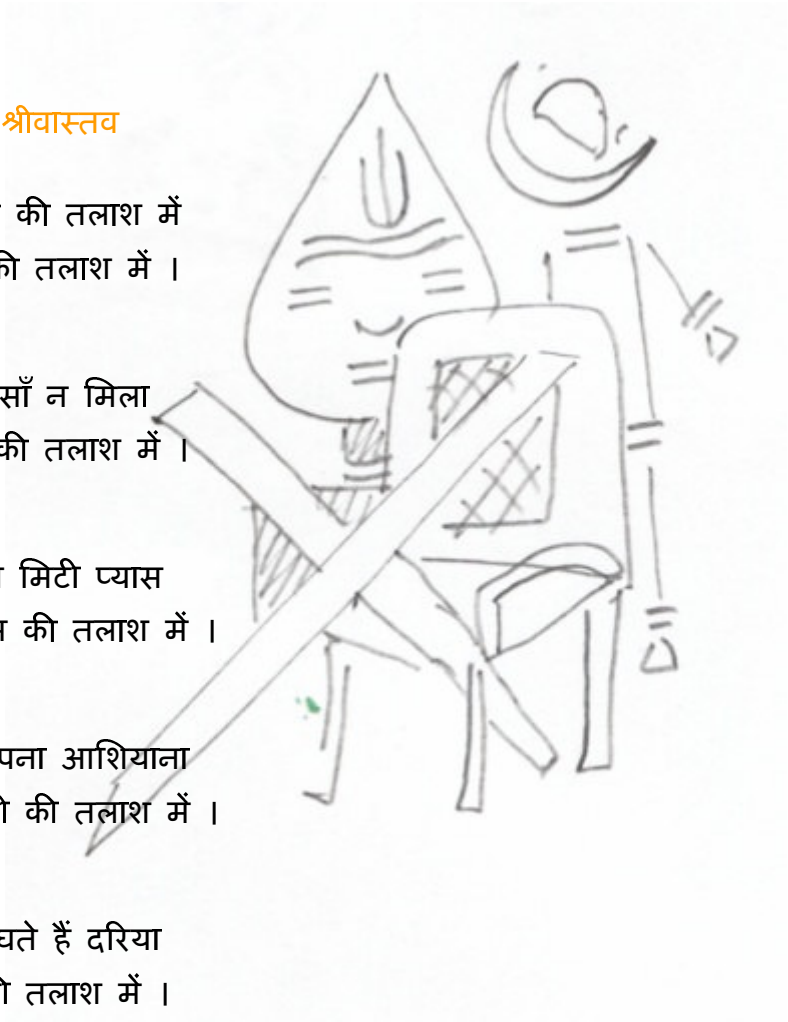

भूले हुए है खुशी को खुशी की तलाश में
हो गए ख़ुद बेवफा वफा की तलाश में ।

बे-दिल दुनियाँ में एक इन्साँ न मिला
हम भटका किए थे खुदा की तलाश में ।

समंदर की लहरों से भी न मिटी प्यास
गोता लगाया व्यर्थ शबनम की तलाश में ।

थे बेखबर जल रहा था अपना आशियाना
भटका किए दरबदर रौशनी की तलाश में ।

लोग तिनकों के सहारे लांघते हैं दरिया
हमसे डूबी कश्ती सहारे की तलाश में ।

अब तक थे शिकार गलतफ़हमी के रवि
मिली थी मौत जिंदगी की तलाश में ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001